प्रेस विज्ञप्ति 06-12-14

शिक्षा में आध्यात्मिकता का समावेश जरूरी- न्यायमूर्ति पी॰ सी॰ घोष

मातृशक्ति का सम्मान बहुत जरूरी है- महामण्डलेश्वर धर्मदेव जी महाराज

शिक्षा में आध्यात्मिकता एवं नैतिक मूल्यों के समावेश से ही समाज में अहिंसा का भाव जाग्रत हो सकता है। इसके लिए सबसे पहले हमें स्वयं में परिवर्तन लाना बहुत जरूरी है। उक्त विचार देश के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, पी॰ सी॰ घोष ने गुड़गाँव,बहोड़ाकलां, ओम् शान्ति रिट्रीट सेन्टर के 14 वें वार्षिक उत्सव के अवसर पर इन्टरपैथ् विषय पर व्यक्त किए। उन्होने कहा कि हमें पहले स्वयं के ही अन्दर देखना है कि मेरे में क्या है, जब हम स्वयं के भीतर के गुणों को महसूस करते हैं तो परिवर्तन असानी से होता है। हिंसा का मूल कारण नैतिक मूल्यों में तेजी से आ रही गिरावट है। हमें विशेष रूप से बच्चों और युवाओं पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी महाराज, हरि मन्दिर आश्रम, पटौदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि मैं अपने को हमेशा एक विद्यार्थी के रूप में ही समझता हूँ, जब हम स्वयं को विद्यार्थी समझते हैं तो हमारे अन्दर सीखने की भावना हमेशा जिन्दा रहती हैं

उन्होने कहा कि अगर हमें समाज को अहिंसक बनाना है तो इसके लिए हिंसा की प्रवृत्ति को उत्पन्न करने वाले मूल को ही नष्ट करना होगा। सबसे पहले हमारे समाज में मातृशक्ति का सम्मान होना चाहिए, जिससे कि बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा हों। सारे विश्व में अगर प्राणी मातृ का भला किसी ने चाहा तो वो भारत ही है, सर्वे भवन्तु सुखिनः ये हमारा एक सन्देश है। उन्होने कहा कि जब आदमी, आदमी से प्यार करेगा, तभी सभी प्राणी मात्र से भी प्यार करेगा। ई आइ मालेकर, प्रीस्ट ने कहा कि समाज को अहिंसक बनाने के लिए हमें महिलाओं पर किए जा रहे अत्याचारों को रोकना होगा। परमात्मा ने मानव को अपनी छबि में बनाया है, जो गुण परमात्मा में हैं वही गुण मानव के अन्दर हैं। जिन्हें पुनः जागृत करने की आवश्यकता है। डा॰ लोकेश मुनि, अहिंसा विश्व भारती, आचार्य लोकेश आश्रम ने कहा कि वास्तव में आज हिंसा एक बहुत बड़ी समस्या है, इसका समाधान तभी हो सकता है जब हम प्रारम्भ से ही शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा पर जोर देंगे। आज परमार्थ का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है। हमें स्वार्थ से ऊपर उठना होगा।

हैदराबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं अनुसूचित जाति आयोग के चैयर पर्सन ने कहा कि जबसे मैं ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया, मेरे जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया। उन्होने कहा कि परमात्मा सर्वव्यापी नही है, बल्कि वो तो परमधाम का रहवासी है, परमात्मा हम मनुष्यों के सदृश्य जन्म नही लेता। परमात्मा परकाया प्रवेश करके हम मनुष्यात्माओं को ज्ञान देते हैं। वर्तमान समय ये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय परमात्मा द्वारा दी जा रही शिक्षाओं का ही सभी मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए प्रचार एवं प्रसार कर रहा है।

महामण्डलेश्वर स्वामी सरवानन्द सरस्वती, महाशक्तिपीठ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं काफी समय से ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में हूँ, ये एक ऐसी संस्था है, जो सिर्फ देना जानती है। हिंसामुक्त समाज के लिए सबसे पहले आहार की शुद्धि बहुत जरूरी है, आहार से ही हमारे व्यवहार का निर्माण होता है, वाणी में मिठास आती है। हिमॉचल प्रदेश से आये चेमगन केन्टिग ताइ सितुपा ने कहा कि अहिंसक समाज के निर्माण में दया, विनम्रता एवं मधुरता जैसे गुण बहुत जरूरी हैं। उन्होने क हा कि अहिंसक समाज की स्थापना करना कोई मुश्किल नही है, इसके लिए शिक्षा के क्षेत्र में आध्यात्मिकता का समावेश बहुत जरूरी है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रबन्धन बहुत ही उच्चस्तरीय कार्य कर रहा है, जिसमें कोई दिखावा नही है।

रामाकृष्ण मिशन से आये सुनील कुमार ने कहा कि हमारा ये समाज हिंसा से मुक्त था, ये तो हमारे इतिहास में भी वर्णन है, जिस रामराज्य की हम कल्पना करते हैं वो एक ऐसा ही समाज रहा है। डा॰ ए॰ के॰ मर्चेंट, लोटस मन्दिर के नेशनल ट्रस्टी अहिंसक समाज के निर्माण के लिए हमारे विचारों में मौलिक परिवर्तन जरूरी है। ओआरसी की निदेशिका ब्र॰ कु॰ आशा ने बताया कि परमात्मा के सिवाए इस संसार को हिंसा मुक्त कोई नही बना सकता। उन्होने कहा कि जब परमात्मा ने सृष्टि रची तो वो सम्पूर्ण अहिंसक थी जिसे हम स्वर्ग कहते हैं,जहाँ के बारे में गायन है कि शेर और बकरी दोनों एक ही घाट पर जल पीते थे। लेकिन धीरे-धीरे वो समय बदल गया और ये समाज हिंसा प्रधान हो गया। इसका मूल कारण आत्मिक स्वरूप की विस्मृति हाने के कारण मानव देह-अभिमान वश काम, क्रोध,लोभ, मोह और अहंकार से भर गया और हिंसा उसके जीवन का एक हिस्सा बन गई। उन्होने कहा कि हिंसा कोई सिर्फ किसी को मार देना ही नही बल्कि काम वासना के वश होकर जब मनुष्य कुकृत्य करता है, तो वो भी अपने श्रेष्ठ स्वमान का खून करता है। अभी वर्तमान में फिर से ये परिवर्तन का समय है जबकि परमात्मा पुनः हिंसामुक्त समाज की स्थापना के लिए राजयोग का ज्ञान दे रहे हैं। कार्यक्रम में अन्य कई विशिष्ठ अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। जिनमें मुख्य रूप से अशोक सज्जनहार, सचिव, नेशनल फाउन्डेशन फॉर कॉम्युनल हारमॅनी, डा॰ एम॰ डी॰ थॉमस, निदेशक, इंस्टीटयूट ऑफ हारमॅनी स्टडीज़, प्रो॰ एस एम मिश्रा एवं मोहम्मद इक़बाल मुल्ला, राष्ट्रीय सचिव, जमाते इस्लामी हिन्द आदि। कार्यक्रम का संचालन ब्र॰ कु॰ हुसैन ने किया। आये हुए सभी मेहमानों ने स्प्रिच्युअल कार्निवाल का भी अवलोकन किया एवं ग्रुप फोटो भी खिंचवाया।